International Journal of Jyotish Research: 2025; 10(2): 185-190

International Journal of Jyotish Research
(वेदचक्षु)

ISSN: 2456-4427
Impact Factor: RJIF: 5.64
Jyotish 2025; 10(2): 185-190
© 2025 Jyotish
www.jyotishajournal.com
Received: 03-09-2025
Accepted: 08-10-2025

डॉ. अन्जना जोशी
प्रोफेसर, मार्गदर्शक, ज्योतिष विभाग, मेवाड़ विष्वविद्यालय, गंगरार, चितौड़गढ़, राजस्थान, भारत

नीरज शर्मा
शोधार्थी, ज्योतिष विभाग, मेवाड़ विष्वविद्यालय, गंगरार, चितौड़गढ, राजस्थान, भारत

Correspondence
नीरज शर्मा
शोधार्थी, ज्योतिष विभाग, मेवाड़ विष्वविद्यालय, गंगरार, चितौड़गढ, राजस्थान, भारत

ज्योतिष शास्त्र की दृष्टि से गण्ड एवं श्वेत कुष्ठ रोग के योगों का विष्लेषण

अन्जना जोशी, नीरज शर्मा

DOI: https://www.doi.org/10.22271/24564427.2025.v10.i2c.290

प्रस्तावना

चरक संहिता के अनुसार रोग मन तथा शरीर में निवास करता है। पांडव गीता में कहा भी गया है –

शरीरं च नवच्छिद्रं व्याधिग्रस्तं कलेवरम् ।
औषधं जाह्नवीतोयं वैद्यो नारायणो हरिः ।। (पांडवगीता 75)

(मानव शरीर नौ छिद्रों से युक्त और व्याधिग्रस्त है, इसके लिये गंगाजल ही औषध और भगवान नारायण ही वैद्य है।)

प्राचीन काल से ही ज्योतिष तथा औषध विज्ञान दोनों ने भारत वर्ष में जीवन शैली को पूर्णतः प्रभावित किया है। वैदिक काल से हमारी धरोहर रहे प्राचीन शास्त्रों में तत्कालीन चिकित्सा प्रणाली आयुर्वेद एवं समान रूप से विकसित वैदिक ज्योतिष के व्यापक सन्दर्भ हमें प्राप्त होते हैं। प्राचीन औषध विज्ञान पर पुस्तकों में विषिष्ट रोग देने वाले ग्रह योगों का सन्दर्भ मिलता है। ये योग इतने असाधारण हैं कि रोग मुक्ति में विषेष सहायता नहीं कर सकते परन्तु वे सिद्धान्तों के उपयोगी रहस्यों को अवष्य प्रकट करते हैं। ठीक इसी प्रकार ज्योतिष शास्त्र भी विषिष्ट रोगों को इंगित करने वाले योगों से भरपूर है। ये सामान्य योग जिन्हें व्यक्तिगत कुण्डलियों पर आसानी से प्रयोग नहीं किया जा सकता यदि उन सिद्धान्तों का सार समझ लिया जाए तो वे कुछ उपयोगी हो सकते हैं। ज्योतिष तथा चिकित्सा पर अलग अलग कई प्राचीन ग्रन्थ उपलब्ध है। प्राचीन ग्रन्थों में जहां कही भी चिकित्सा ज्योतिष का सन्दर्भ मिलता है वहां साहित्य बहुत न्यून है। अतः इस शोध में इन ग्रन्थों का अध्ययन करते हुए जन्मकुण्डली में ग्रह योगों से उत्पन्न चर्म रोग को खोजकर प्रस्तुत करने का एक प्रयास है।

विषय चयन का औचित्य एवं उदेष्य

प्राचीन समय में प्रत्येक व्यक्ति अपने स्वास्थ्य के प्रति सजग एवं खूब शारीरिक परिश्रम करते हुए शुद्ध देषी खान–पान पर विषेष ध्यान देते थे। जिससे उनके शरीर में चर्म रोग से सम्बन्धित रोग बहुत कम मात्रा में देखने को मिलते थे। परन्तु आज के परिपेक्ष्य में प्रत्येक व्यक्ति निक्रिष्ट पदार्थों का सेवन करने वाले, अपने स्वास्थ्य के प्रति ध्यान ना देने वाले तथा शारीरिक रूप से मेहनत ना करने वाले हैं जिससे उन्हें अनेक बीमारियों के साथ–साथ चर्म रोग से सम्बन्धित विभिन्न प्रकार के रोगों का सामना करना पड़ रहा है।

प्राचीन समय में ज्योतिष शास्त्र के आचार्यों ने अपने ग्रन्थों में चर्म रोग से सम्बन्धित अनेक योगों के बारे में विस्तार से वर्णन किया है जिसे आज के देष काल पात्र को ध्यान में रखते हुए उन योगों के माध्यम से जन्मपत्रिकाओं में देखकर चर्म रोग का पता लगाना ही इस चयनित विषय का औचित्य एवं उदेष्य है।

ज्योतिष शास्त्रानुसार चर्म रोग के लिए जो ग्रह, व भाव उत्तरदायी मानी गई हैं वो निम्नलिखित हैः–

संबंधित भाव

छठा भाव (रोग स्थान):– शरीर में उत्पन्न होने वाले रोग की प्रकृति को दर्शाता है।
आठवां भावः– दीर्घकालिक होने वाले रोग व छुपे हुए विकारको दर्षाता है।
बारहवां भावः– अस्पताल, दवा व खर्च से सम्बन्धित ।

संबंधित ग्रह

चंद्रमाः– मानसिक कारणों से उत्पन्न रोग।
मंगलः– मंगल फोड़े–फुंसी, खाज, सूजन, कुष्ठ, दाने व चर्म जलनसे सम्बन्धित है।
बुधः– बुध ग्रह श्वेत कुष्ठ व दाद सम्बन्धित रोग से सम्बन्ध रखता है।
शनिः– शनि चर्म रोगों का मुख्य कारक ग्रह है जो विशेषकर काली त्वचा, खुजली, सूजन से सम्बन्धित है।
राहुः– राहु एलर्जी, फंगल संक्रमण, चेचक, कुष्ठ व आधुनिक रोग से सम्बन्धित है।
केतुः– केतु चर्म रोग में घाव, छाले, एलर्जी, जहरीले जानवर व संक्रमण से उत्पन्न संक्रामक रोग आदि से सम्बन्धित है।

त्वचा रोग से सम्बन्धित संकलित योग

गण्ड रोग होने के योग

शरीर में जगह जगह गांठे होने को गण्ड रोग कहते हैं। यह रोग निम्नलिखित ग्रह योगों के प्रभाव से होता है।
षष्ठ भाव में या द्वादष भाव में मंगल और शनि का योग शुभ ग्रहों से दृष्ट ना हो तो जातक को गण्डमाला रोग होता है।

ष्षष्ठेऽन्त्ये वारार्कियोगे सौम्यादृष्टे गण्डमालादयः ।। (1)

लग्नेष यदि त्रिक भाव में सूर्य के साथ हो तो जातक को तापगण्ड रोग होता है।

लग्नेषार्को त्रिके तापगण्डः ।। (2)

त्रिक स्थान में यदि लग्नेष और चन्द्रमा की युति हो तो जातक को जलज गण्डरोग उत्पन्न होता है।

चन्द्राङगेषौ त्रिके जलजगण्डः ।। (3)

चन्द्रमा की युति लग्नेष षष्ठेष के साथ त्रिक स्थान में हो तो जातक को जलज गण्ड रोग होता है।

लग्नषष्ठेंषचन्द्रास्त्रिके जलजगण्डः ।। (4)

कारकांष कुण्डली में मकर लग्न में हो तो शरीर में गांठे होती है।

मकरांषे दुष्टग्रन्थिगण्डादि ।। (5)

जब जन्मपत्रिका में लग्न, अष्टम और छठे भाव के अधिपति सूर्य से युक्त हों तो ज्वरोद्भव गण्डरोग होता है। चन्द्रमा से युत हो तो जल सम्बन्धी गण्ड रोग, मंगल से युत हो तो शस्त्र से घाव या गांठ होता है। बुध से पित्त जन्य गण्ड रोग, गुरू से सामान्य रोग, शुक्र से युत होने पर स्त्री जन्य, शनि से अन्त्यज जन्य, राहु से चोर सम्बन्धी और केतु से युत होने पर सर्पोद्भव रोग होता है।

गण्डः स्याद्रविणान्वितो ज्वरभवोलग्नाष्टषष्ठाधिपाः,
चन्द्रेणाम्बुभवः कुजेन तदनुस्याद्ग्रन्थिषस्त्रोद्भवः ।
पैत्र्योऽधोऽथ विदा रुजस्तु गुरुणा शुक्रेणजायोद्भवः,
सौरेणान्त्यजचोरजं सतमसा सर्पोद्भवं केतुना ।। (6)

कुष्ठ (सफेद दाद) होने के योग

वातादयस्त्रयो दुष्टास्त्वग् रक्तं मांसमम्बु च ।
दूषयन्ति स कुष्ठानां सप्तको द्रव्यसंग्रह ।।

कुष्ठ रोग को छूत की बीमारी के नाम से जाना जाता है। यह बीमारी एक से दूसरे व्यक्ति में लग जाती है। त्वचा, मास, जल, खाल व रक्त को वातादि दोष दूषित कर देते हैं तब यह रोग होने की संभावना बनती है। यह रोग होने से शरीर पर लाल, नीले या सफेद दाग बन जाते हैं तथा शरीर के अंग धीरे–धीरे श्वतः ही गलने लग जाते हैं। वात, पित्त, कफ, त्वचा, रक्त, मांस एवं जल ये सात द्रव्य कुष्ठ के आधार होते हैं।

चिकित्सा फलित ग्रन्थों में इस रोग उत्पन्न होने के योगों का निम्नलिखित वर्णन प्राप्त होता है

सूर्य, शुक्र एवं शनि ये तीनों ग्रह एक साथ स्थित हों तो जातक शत्रुओं के डर से उद्विग्न रहने वाला, सम्मान व कलात्मकता, काव्यात्मकता से रहित, निन्दनीय चरित्र वाला व त्वचा विकार से युक्त कुष्ठ रोग वाला होता है।

शत्रुभयात् सोद्वेगो मानकलाकाव्यवर्जितो मनुजः ।
कुत्सितचरितः कुष्ठी सितार्किरविसंयुतैर्भवति ।। (7)

लग्नेश एवं बुध अथवा मंगल और चन्द्रमा किसी भी भाव में बैठकर राहु–केतु से युक्त हों तो मनुष्य को सफेद कोढ़ होता है। यदि सूर्य मंगल से युक्त हो तो रक्त कुष्ठ एवं सूर्य शनि से युक्त हो तो कृष्ण कुष्ठ होता है। यदि लग्नेष एवं सूर्य दोनों साथ–साथ 6,8,12 में हो तो मनुष्य को बारम्बार बुखार के विविध प्रकारों से पीड़ित होना पड़ता है।

लग्नाधीषेन्दुपुत्रौ क्षितितनयनि शानायकौ क्वापि संस्थौ,
युक्तौ स्वर्भानुना वा भवति हि मनुजः केतुना श्वेतकुष्ठी ।
आदित्यो भौमयुक्तस्तदनु शनियुतो रक्तकृष्णाख्यकुष्ठी,
सार्को लग्नाधिनाथो व्ययरिपुनिधनस्थानगस्तापगण्डः ।। (8)

शुक्र और चन्द्रमा यदि पाप ग्रहों के साथ जलीय राषि में स्थित हो तो जातक को श्वेत कुष्ठ रोग होता है।

चन्द्राच्छौ सपापौ जलभगौ ष्वित्रि ।। (9)

कारकांष लग्न से चतुर्थ भाव में चन्द्रमा शुक्र से दृष्ट हो तो जातक श्वेत कुष्ठ रोग से पीड़ित होता है।

अंषात्सुखे चन्द्रे शुक्रदृष्टे ष्वित्रि ।। (10)

लग्नेष अथवा चन्द्र मंगल, राहु या केतु से किसी भी स्थान में युत हों तो श्वेत कुष्ठ रोग या सफेद दाग होता है।

लग्नेषेन्द्वारौ वा राहुकेत्वन्यतरयुतौ एकत्रे ष्वित्रि ।। (11)

ष्शनि, मंगल और चन्द्रमा मेष या वृष राषि में युत हों तो श्वेत कुष्ठ रोग होता है।

मन्दारचन्द्रा मेषे वा वृषे ष्वित्रि ।। (12)

शनि और मंगल द्वादष और द्वितीय भाव में, चन्द्रमा लग्न में और सूर्य सप्तमभाव में स्थित हों तो जातक श्वेत कुष्ठ रोग से पीड़ित होता है।

सौरारयो रिःफधनस्थ्योः क्रमाल्लग्ने चन्द्रे सूर्येऽस्ते ष्वित्रि ।। (13)

शनि, मंगल, चन्द्रमा और शुक्र यदि जलराषिगत होकर पाप ग्रहों से युत अथवा दृष्ट हों तो जातक स्रावयुक्त (गलित) कुष्ठ रोगी होता है।

मन्दारेन्द्वच्छेषु क्रूरार्दितेषु जलभगेषु सजलकुष्ठी ।। (14)

मंगल, सूर्य और षनि यदि एक राषिस्थ हो तो जातक कृष्णाख्य (रक्त) कुष्ठ रोग से पीड़ित होता है।

मन्दार्कारयुतौ रक्तकृष्णाख्य कुष्ठीः ।। (15)

उपर्युक्त संकलित योगानुसार चर्म रोग देखे जा सकते हैं। इसी मध्य अनेक विद्वानों द्वारा सार गर्भित अनुभव से देखा गया है और पहचान की गई है कि जन्मपत्रिकाओं में प्रायषः शनि और बुध ग्रह के पापाक्रान्त अथवा निर्बल स्थिति होने से भी चर्म रोग का तत्कालिक रूप से विचार करना चाहिए। अतः नीचे अनुभव से शोध की गई कुछ जन्मपत्रिकाऐं उदाहरण स्वरूप दी जा रही है जो जन्म दिनांकादि, समयादि व स्थानादि सहित बुध और शनि के दुष्प्रभाव से चर्म रोगग्रस्त देखी गई है।

उदाहरण कुण्डलियां

केस स्टडी नं. 01

जन्म दिनांकः– 20 फरवरी 1979
जन्म समयः– प्रातः 10:17 बजे
जन्म स्थान :– भादरा (राजस्थान)

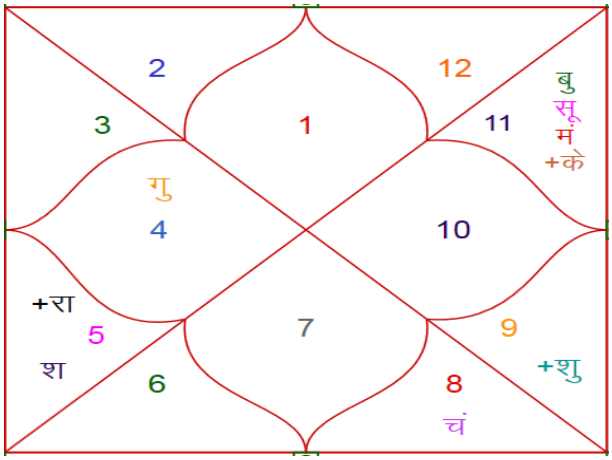

- प्रस्तुत जन्मपत्रिका में लग्नेष मंगल त्रिक् भाव में स्थित है।
- तृतीयेष व षष्ठेष बुध सूर्य, मंगल व केतु के साथ त्रिक् भाव में पापाक्रान्त स्थिति में है।
- एकादषेष व द्वादषेष शनि पंचम भाव में शनि की राषि में विद्यमान है।
- शास्त्रीय योगानुसार जन्मपत्रिका में लग्न, अष्टम और छठे भाव के अधिपति सूर्य से युक्त हो तो ज्वरोद्भव गण्डरोग होता है। उपर्युक्त कुण्डली में लग्न, अष्टम और छठे भाव के अधिपति मंगल और बुध लाभ भाव में सूर्य के साथ होने से जातक को जगह–जगह शरीर पर गांठे है तथा मंगल से युत होने के कारण साथ में घाव भी है।
- उपर्युक्त कुण्डली में लग्नेष मंगल एवं बुध की युति एकादष भाव में केतु के साथ होने से जातक को सफेद कोढ़ भी है।
- सूर्य मंगल से युक्त होने से जातक को रक्त कुष्ठ है।
- अतः इस 44 वर्षीय जातक को शरीर पर कुछ जगहों पर गांठे तथा 2020 से हाथ व पूरे मुंह पर सफेद दाग तथा शरीर के कुछ स्थानों पर रक्त कुष्ठ भी विद्यमान है।

केस स्टडी नं. 02

जन्म दिनांकः– 20 अप्रेल 1970
जन्म समयः– सांय 16:20 बजे
जन्म स्थान :– जोधपुर (राजस्थान)

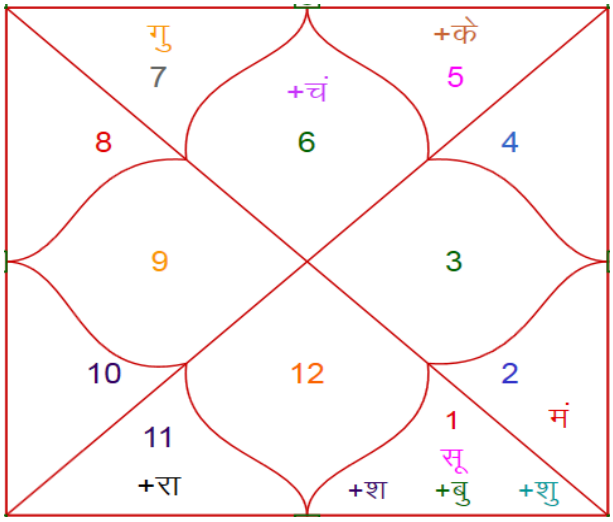

- जन्मपत्रिका में लग्नेष बुध अष्टम स्थान में नीचस्थ शनि व सूर्य के साथ पीड़ित अवस्था में है।
- षष्ठेष शनि अष्टम स्थान में नीचस्थ होकर सूर्य के साथ विद्यमान् है।

शास्त्रीय योगानुसार

- बुध के साथ षष्ठेष यदि लग्न या अष्टम भावगत हो तो हृदय या वक्ष पर घाव होता है।
- सूर्य, शुक्र तथा शनि तीनों ग्रह एक साथ स्थित हो तो जातक शत्रुओं के डर से उद्विग्न रहने वाला, सम्मान व कलात्मकता, काव्यात्मकता से रहित निन्दनीय चरित्र वाला व त्वचा विकार से युक्त कुष्ठ रोग वाला होता है।
- उपर्युक्त शास्त्रीय योग कुण्डली में सम्पूर्ण लागु होते है ।
- अतः इस जातिका को धूप में जाते ही गम्भीर रंजकता (Severe Pigmentation) हो जाती है।
- जातिका को वक्ष पर व पैरों पर घाव के साथ साथ कुष्ठ रोग भी है।

केस स्टडी नं.03

जन्म दिनांकः– 12 फरवरी 1991
जन्म समयः– सांय 18:45 बजे
जन्म स्थान :– सादुलषहर (राजस्थान)

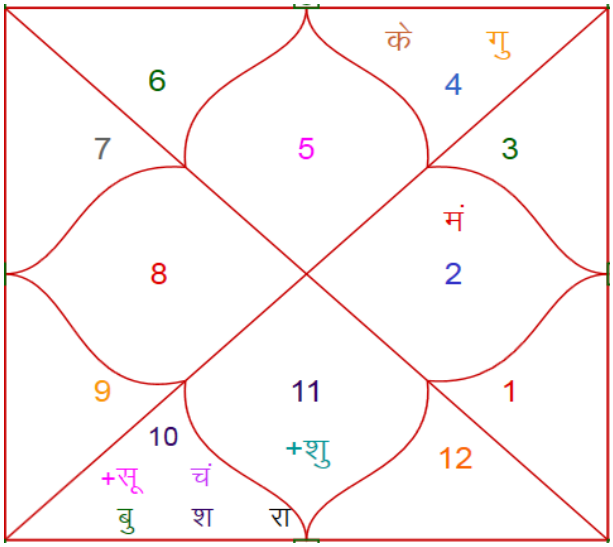

- जातिका के लग्न पर मंगल की दृष्टि व लग्नेष छठे भाव में शत्रु राषि में शनि व राहु के साथ विद्यमान् है।
- अष्टमेष गुरू द्वादष भाव में केतु के साथ स्थित है जिस पर पाप ग्रह शनि, सूर्य व राहु की पूर्ण दृष्टि है।

शास्त्रीय योगानुसार

- त्रिक् स्थान में यदि लग्नेष और चन्द्रमा की युति हो तो जातक को जलज गण्ड रोग उत्पन्न होता है।
- चन्द्रमा की युति लग्नेष व षष्ठेष के साथ त्रिक् भाव में हो तो जातक को जलज गण्ड रोग होता है।
- लग्नेष एवं बुध अथवा मंगल और चन्द्रमा किसी भी भाव में बैठकर राहु–केतु से युक्त हों तो मनुष्य को सफेद कोढ़ होता है।
- यदि सूर्य मंगल से युक्त हो तो रक्त कुष्ठ एवं सूर्य शनि से युक्त हो तो कृष्ण कुष्ठ होता है।

इस जातक को हाथ, पैर, छाती व हृदय पर जलनुमा गांठे हो रखी है तथा मुंह, गला, हथेली व घुटनों पर सफेद व काले दाग हो रखे हैं।

केस स्टडी नं. 04

जन्म दिनांकः– 12 दिसम्बर 1993
जन्म समयः– प्रातः 08:10 बजे
जन्म स्थान :– श्रीडूंगरगढ़ (राजस्थान)

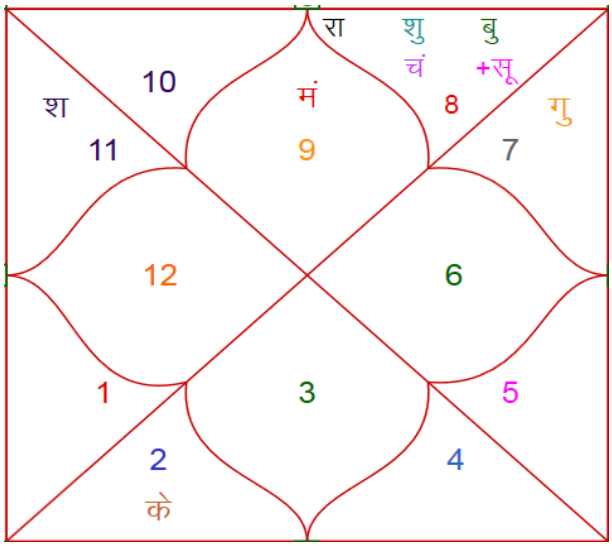

- प्रस्तुत जन्मपत्रिका 29 वर्षीय जातक की है। जातक के लग्न में मंगल है और लग्नेष एकादष भाव में शत्रु की राषि में स्थित है।
- षष्ठेष शुक्र पाप ग्रह राहु व क्रूर ग्रह शुक्र के साथ द्वादष भाव में पापाक्रान्त स्थिति में है जिसे केतु पूर्ण दृष्टि से देख रहा है।
- अष्टमेष चन्द्रमा भी सूर्य व राहु के साथ द्वादष भाव में है जिसे केतु पूर्ण दृष्टि से देख रहा है।

शास्त्रीय योगानुसार

शुक्र और चन्द्रमा यदि पाप ग्रहों के साथ जलीय राषि में स्थित हो तो जातक को श्वेत कुष्ठ रोग होता है।
उपर्युक्त परिस्थितियों के अनुसार इस जातक को गले पर, कलाई पर, जांघों पर, गर्दन व कमर पर बार बार दाद तथा फुंसिया होती है।

केस स्टडी नं. 05

जन्म दिनांकः– 13 मई 2004
जन्म समयः– दोपहर 13:05 बजे
जन्म स्थान :– दिल्ली

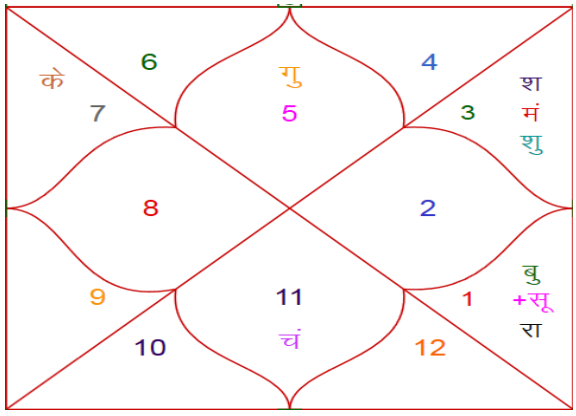

- उपर्युक्त जन्मपत्रिका एक 18 वर्षीय जातिका की है। लग्न पर शनि की दृष्टि है तथा लग्नेष सूर्य नवम भाव में राहु के साथ युक्त व केतु से दृष्ट है।
- तृतीय भाव में केतु स्थित है जिस पर सूर्य व राहु की दृष्टि है तथा तृतीयेष शुक्र एकादष भाव में शनि व मंगल के साथ विराजमान है।
- षष्ठेष शनि मंगल के साथ एकादष भाव में विराजमान है।
- अष्टमेष गुरू लग्न में स्थित है जिस पर शनि की पाप दृष्टि है।

शास्त्रीय योगानुसार

- लग्नेष एवं बुध अथवा मंगल और चन्द्रमा किसी भी भाव में बैठकर राहु–केतु से युक्त हों तो मनुष्य को सफेद कोढ़ होता है।
- जातिका के गर्दन व कमर पर बार–बार दाद, दाने निकलना, गर्दन से बालों का सफेद होना व बालों का उड़ना पाया गया है तथा जातिका को कमर के पृष्ठ भाग पर सफेद दाग भी है।

केस स्टडी नं. 06

जन्म दिनांकः– 22 जनवरी 1994
जन्म समयः– प्रातः 01:10 बजे
जन्म स्थान :– श्रीगंगानगर (राजस्थान)

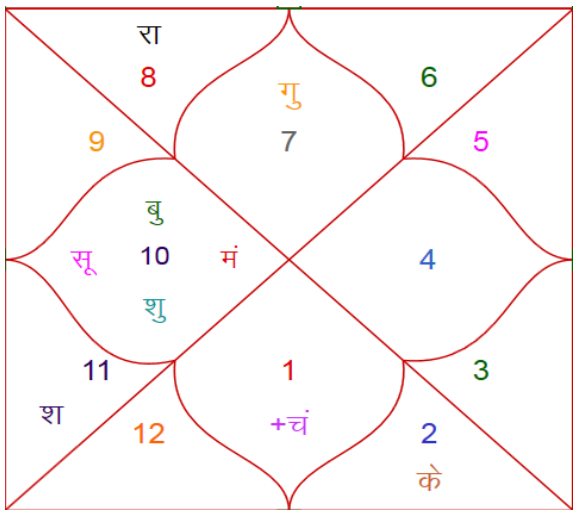

उपर्युक्त जन्मपत्रिका में लग्नेष व अष्टमेष शुक्र चतुर्थ स्थान में सूर्य व मंगल के साथ विराजमान है तथा चर्म रोग कारक ग्रह बुध भी सूर्य व मंगल के साथ चतुर्थ भाव में पापाक्रान्त स्थिति में है।

शास्त्रीय योगानुसार

- लग्नेष एवं बुध अथवा मंगल और चन्द्रमा किसी भी भाव में बैठकर राहु–केतु से युक्त हों तो मनुष्य को सफेद कोढ़ होता है।
- अतः जातिका को बार–बार मुंह पर छोटे–छोटे आकार मे दाने, शरीर के कुछ स्थानों पर दाद व खुजली होकर जलन जन्य उपद्रव पैदा होते हैं तथा जातिका के हाथ व मुंह पर सफेद दाग भी देखे गये हैं।

केस स्टडी नं. 07

जन्म दिनांकः– 27 जुलाई 1997
जन्म समयः– प्रातः 01:15 बजे
जन्म स्थान :– तारानगर (राजस्थान)

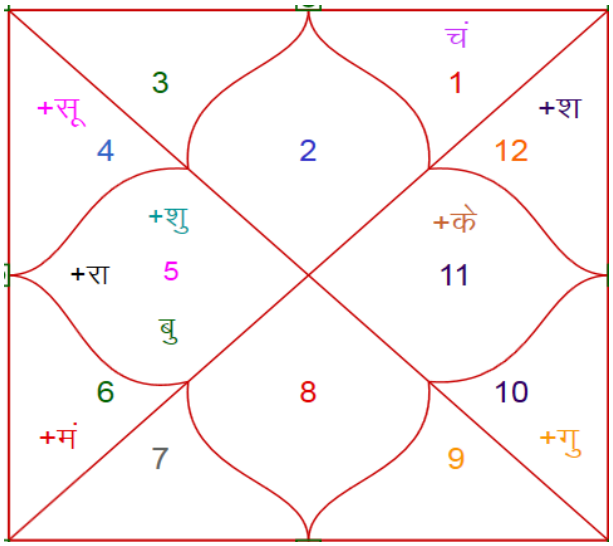

- उपर्युक्त जातिका की जन्मपत्रिका में लग्न पर पाप ग्रह शनि की दृष्टि तथा लग्नेष व षष्ठेष शुक्र चतुर्थ भाव में सूर्य की राषि में राहु के साथ विद्यमान् है जिसे केतु पूर्ण दृष्टि से देख रहा है।
- तृतीय भाव में सूर्य स्थिति है तथा तृतीयेष चन्द्रमा द्वादष भाव में स्थित है और अष्टमेष गुरू शनि की राषि में स्थित है और अष्टम भाव को मंगल देख रहा है।
- चर्म रोग का कारक ग्रह बुध चतुर्थ स्थान में राहु के साथ युक्त है जिसे केतु पूर्ण दृष्टि से देख रहा है। शनि एकादष भाव में गुरू की राषि में बैठा है जिस पर मंगल पूर्ण दृष्टि डाल रहा है।

शास्त्रीय योगानुसार

लग्नेष एवं बुध अथवा मंगल और चन्द्रमा किसी भी भाव में बैठकर राहु–केतु से युक्त हों तो मनुष्य को सफेद कोढ़ होता है।
अतः जातिका को बार–बार मुंह पर छोटे–छोटे आकार मे दाने, शरीर के कुछ स्थानों पर दाद व खुजली होकर जलन जन्य उपद्रव पैदा होते हैं तथा जातिका के हाथ पर सफेद दाग भी देखे गये हैं।

केस स्टडी नं. 08

जन्म दिनांकः– 04 मार्च 2000
जन्म समयः– सांय 17:00 बजे
जन्म स्थान :– चूरू (राजस्थान)

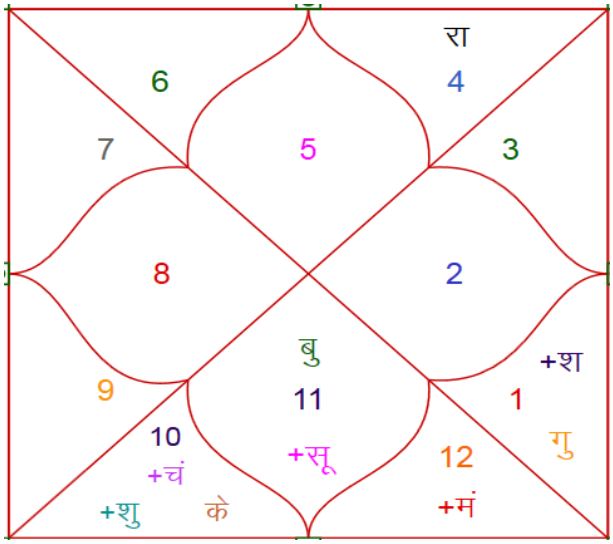

- उपर्युक्त कुण्डली में लग्नेष सूर्य शत्रु राषि में स्थित है।
- तृतीय भाव पर मंगल की दृष्टि है तथा तृतीयेष शुक्र छठे स्थान पर केतु के साथ राहु से दृष्ट है।
- षष्ठेष शनि नवम भाव में नीच राषिस्थ है तथा अष्टमेष गुरू भी नवम स्थान में शनि के साथ ही विद्यमान् है।

शास्त्रीय योगानुसार

- शुक्र और चन्द्रमा पाप ग्रहों के साथ जलीय राषि में स्थित हो तो जातक को श्वेत कुष्ठ रोग होता है।
- अतः उपर्युक्त जातिका को मुंह पर मुंहासे, फोड़े–फुंसी व ठोड़ी पर सफेद दाग देखने को मिला है तथा शरीर के कुछ हिस्सों में काले चकते होकर खुजली व जलन जन्य उपद्रव उत्पन्न होते हैं।

केस स्टडी नं.09

जन्म दिनांकः– 04 सितम्बर 1998
जन्म समयः– प्रातः 08:05 बजे
जन्म स्थान :– सिवाणी (हरियाणा)

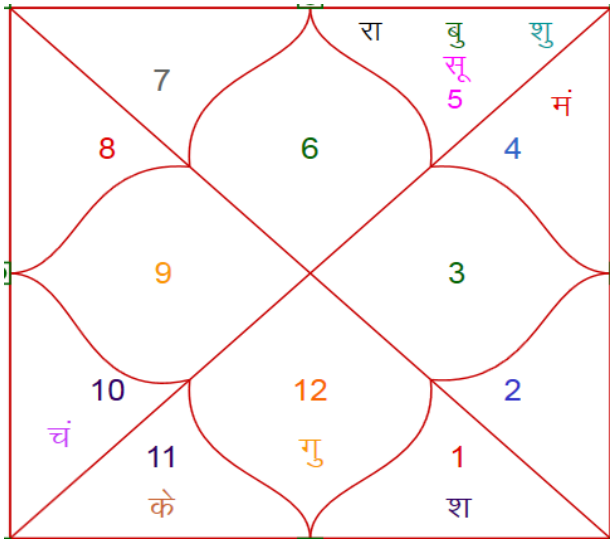

- उपर्युक्त कुण्डली में लग्नेष बुध द्वादष भाव में सूर्य व राहु से युक्त है जिसे केतु पूर्ण रूप से देख रहा है।
- तृतीयेष व अष्टमेष मंगल त्रिक् भाव में स्थित है।
- छठे भाव पर मंगल की दृष्टि है तथा षष्ठेष शनि अष्टम भाव में नीच राषिस्थ बैठा है।

शास्त्रीय योगानुसार

लग्नेष अथवा चन्द्र मंगल, राहु या केतु से किसी भी स्थान में युत हो तो श्वेत कुष्ठ रोग या सफेद दाग होता है।

अतः जातिका को बांई आंख के पास सफेद दाग व मुंह पर दाने निकलने के साथ शरीर पर फंगल भी पाया गया है।

केस स्टडी नं.10

जन्म दिनांकः– 19 अप्रेल 1998

जन्म समयः– प्रातः 06:00 बजे

जन्म स्थान :– बीकानेर (राजस्थान)

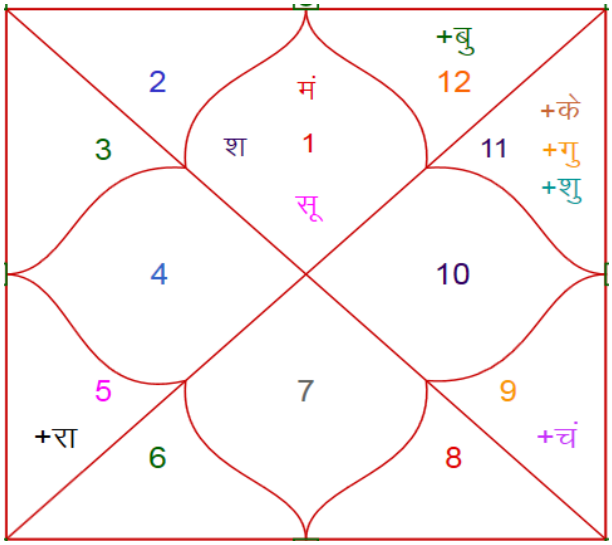

- प्रस्तुत जन्मपत्रिका एक 25 वर्षीय जातिका की है जिसमें लग्न भाव में स्वग्रही मंगल, नीच रीषिस्थ शनि और उच्च राषिस्थ सूर्य विराजमान है।
- तृतीय भाव पर पाप ग्रह शनि की दृष्टि है तथा तृतीयेष व षष्ठेष द्वादष भाव में नीच रीषिस्थ स्थित है।

शास्त्रीय योगानुसार

- मंगल सूर्य और शनि यदि एक राषिस्थ हो तो जातक कृष्णाख्य (रक्त) कुष्ठ रोग से पीड़ित होता है।
- अतः इस जातिका के मुंह पर लाल रंग के छोटे–छोटे दाने व मुंहासे तथा शरीर के विभिन्न भागों पर लाल रंग के गोल–गोल दाग बने हुए देखे गए हैं और पैरों पर रिसने वाले फोड़े भी पाये गए हैं।

निष्कर्ष

1. यदि किसी जातक या जातिका की कुण्डली में चर्म रोग कारक ग्रह बुध व शनि निर्बल या पापांक्रान्त स्थिति में है तो उस जातक को चर्म रोग अवष्य होगा।
2. कुण्डली में बुध पीड़ित है और वह उच्च राषि या मित्र राषि में भी है तो भी जातक को चर्म रोग होने की प्रबल सम्भावना बनी रहेगी।
3. पाप ग्रह लग्न में या लग्न पर पाप ग्रहों की दृष्टि भी जातक को चर्म रोगी होने की सम्भावना दर्षाती है।
4. लग्न, तृतीय, षष्ठ एवं अष्टम भाव में पाप ग्रह की स्थिति से भी चर्म रोग की सम्भावना बनती है।
5. लग्न, अष्टम और छठे भाव के अधिपति सूर्य से युक्त हो तो ज्वरोद्भव गण्डरोग होता है।
6. अष्टम स्थान में स्थित सूर्य को यदि मंगल देखता हो तो विसर्प या स्फोट रोग होने की सम्भावना बनती है।
7. सूर्य, शुक्र एवं शनि ये तीनों ग्रह एक साथ स्थित हो तो जातक को कुष्ठ रोग होने की सम्भावनाऐं बनती है।
8. लग्नेष एवं बुध अथवा मंगल और चन्द्रमा किसी भी भाव में बैठकर राहु–केतु से युक्त हों तो सफेद कोढ़ होने की समभावनाऐं बनती है।
9. लग्नेष अथवा चन्द्र मंगल राहु या केतु से किसी भी स्थान में युत हों तो सफेद दाग या श्वेत कुष्ठ रोग होने की प्रबल सम्भावना को दर्षाता है।

संदर्भ

1. जातक तत्वम, व्याख्याकार डॉ. हरिषंकर पाठक, प्रकीर्णतत्वान्तर्गत षष्ठविवेकः,श्लोक 37 पृ.257, चौखम्बा सुरभारती प्रकाषन, वाराणसी, संस्करण–2019
2. जातक तत्वम, व्याख्याकार डॉ. हरिषंकर पाठक, प्रकीर्णतत्वान्तर्गत षष्ठविवेकः,श्लोक 39 पृ.260, चौखम्बा सुरभारती प्रकाषन, वाराणसी, संस्करण–2019
3. जातक तत्वम, व्याख्याकार डॉ. हरिषंकर पाठक, प्रकीर्णतत्वान्तर्गत षष्ठविवेकः,श्लोक 40 पृ.260, चौखम्बा सुरभारती प्रकाषन, वाराणसी, संस्करण–2019
4. जातक तत्वम, व्याख्याकार डॉ. हरिषंकर पाठक, प्रकीर्णतत्वान्तर्गत षष्ठविवेकः,श्लोक 41 पृ.260, चौखम्बा सुरभारती प्रकाषन, वाराणसी, संस्करण–2019
5. जातक तत्वम, व्याख्याकार डॉ. हरिषंकर पाठक, प्रकीर्णतत्वान्तर्गत षष्ठविवेकः,श्लोक 42 पृ.260, चौखम्बा सुरभारती प्रकाषन, वाराणसी, संस्करण–2019
6. दैवज्ञाभरणम्, व्याख्याकार उपाध्याय चन्द्रमौली, अ.14 श्लोक.20 पृ.199, चौखम्भा पब्लिकेषन्स, नई दिल्ली, संस्करण–वि.सं.2068
7. व्याख्याकार मिश्र डॉ. सुरेषचन्द्र, सारावली, अ.16 श्.15 पृ. 125, रंजन पब्लिकेषन्स, संस्करण–2021
8. जातकालंकार, व्याख्याकार डॉ. सुरेषचन्द्र मिश्र अ.3 योगाध्याय श्.6 पृ.74, रंजन पब्लिकेषन्स, संस्करण–2019
9. जातक तत्वम, व्याख्याकार डॉ. हरिषंकर पाठक, प्रकीर्णतत्वान्तर्गत षष्ठविवेकः,ष्लोक 128 पृ.267, रंजन पब्लिकेषन्स, संस्करण–2019
10. जातक तत्वम, व्याख्याकार डॉ. हरिषंकर पाठक, प्रकीर्णतत्वान्तर्गत षष्ठविवेकः,ष्लोक 129 पृ.267, रंजन पब्लिकेषन्स, संस्करण–2019
11. जातक तत्वम, व्याख्याकार डॉ. हरिषंकर पाठक, प्रकीर्णतत्वान्तर्गत षष्ठविवेकः,ष्लोक 130 पृ.267, रंजन पब्लिकेषन्स, संस्करण–2019
12. जातक तत्वम, व्याख्याकार डॉ. हरिषंकर पाठक, प्रकीर्णतत्वान्तर्गत षष्ठविवेकः,ष्लोक 131 पृ.267, रंजन पब्लिकेषन्स, संस्करण–2019
13. जातक तत्वम, व्याख्याकार डॉ. हरिषंकर पाठक, प्रकीर्णतत्वान्तर्गत षष्ठविवेकः,ष्लोक 132 पृ.267, रंजन पब्लिकेषन्स, संस्करण–2019
14. जातक तत्वम, व्याख्याकार डॉ. हरिषंकर पाठक, प्रकीर्णतत्वान्तर्गत षष्ठविवेकः,ष्लोक 121 पृ.267, चौखम्बा सुरभारती प्रकाषन, वाराणसी, संस्करण–2019
15. जातक तत्वम, व्याख्याकार डॉ. हरिषंकर पाठक, प्रकीर्णतत्वान्तर्गत षष्ठविवेकः,ष्लोक 122 पृ.267, चौखम्बा सुरभारती प्रकाषन, वाराणसी, संस्करण–2019